डॉ०मनोज कुमार सिंह,सह-आचार्य, हिंदी विभाग, राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान।

बी०ए०पार्ट-१,हिंदी प्रतिष्ठा,पेपर-३

अरुण यह मधुमय देश हमारा-जयशंकर प्रसाद

अरुण यह मधुमय देश हमारा।

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा॥

सरल तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।

छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा॥

लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे।

उड़ते खग जिस ओर मुँह किए, समझ नीड़ निज प्यारा॥

बरसाती आँखों के बादल, बनते जहाँ भरे करुणा जल।

लहरें टकरातीं अनन्त की, पाकर जहाँ किनारा॥

हेम कुम्भ ले उषा सवेरे, भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मंदिर ऊँघते रहते जब, जगकर रजनी भर तारा॥

प्रस्तुत गीत छायावाद के प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित "चंद्रगुप्त" नाटक से उद्धृत है । सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस की पुत्री कार्नेलिया सिंधु नदी के किनारे ग्रीक शिविर के पास एक वृक्ष के नीचे बैठी है । वहां कार्नेलिया के मुख से जयशंकर प्रसाद ने प्रकृति चित्रण के बहाने भारतवर्ष का यशोगान करवाया है और भारत देश की गौरवमयी पहचान निर्धारित की है ।

प्रस्तुत गीत में कार्नेलिया भारत भूमि की महिमा का बखान कर रही है । प्रातः कालीन लालिमा से युक्त हमारा प्यारा भारत देश बहुत ही आनंददायी है । विश्व के कोने-कोने से आए ज्ञानियों, जिज्ञासुओ एवं सुख - कामनाओं वाले मनुष्य को यहां आकर तृप्ति और संतुष्टि मिलती है । प्रातः काल में वृक्ष की फुनगियों पर लालीमा का सौंदर्य ऐसा लग रहा है मानो किसी ने जीवन रूपी हरियाली पर कुमकुम रूपी लालिमा बिखेर दिया हो । छोटे-छोटे इंद्रधनुष के समान रंग बिरंगे पंखों वाले पंछी चंदन वाली शीतल बयार के साथ जिस तरह अपने प्यारे घोसलों में जाने हेतु उत्साहित हुए उड़े आते हैं , ऐसा मेरा मनोहर भारत देश है ।

भारत के लोगों की विशेषता इस गीत के माध्यम से स्पष्ट करती हुई कार्नेलिया कहती है कि यहां के निवासी करूणा एवं दया से परिपूरित हैं । दूसरे के दुखों से द्रवित हो उनकी आंखों से निकलने वाले आंसू ही बादल बन करूणा की वर्षा करते हैं । सागर की लहरें किसी अनंत से आकर अनंत भारतवर्ष को अपना आश्रय स्थल बनाती हैं। वस्तुतः यहां की प्रातः कालीन शोभा अवर्णनीय है । रात भर चमकने वाले तारे भोर के समय मदमस्त हो ऊंघने लगते हैं । तब उषा रूपी सुंदरी सूर्य रूपी घड़े को आकाश रूपी कुएं में डूबा कर लाती है और भारतवर्ष पर आनंद और सुख का प्रकाश बिखेरती है ।

विशेष:-

- इस गीत में भारत की गौरव गाथा एवं प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन है।

- छायावाद के आधारस्तंभ प्रसाद की उक्त कृति में छायावादी शिल्प शैली दृष्टिगोचर होती है।

- तत्सम शब्दावली में खड़ी बोली की साहित्यिकता का निर्धारण उक्त गीत से हो जाता है ।

--"छिटका जीवन हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा"रूपक अलंकार है ।

- "लघु सुरधनु से पंख पसारे" उपमा अलंकार है ।

- "समीर सहारे' "बादल बनते" "जब जगकर" में छेका अनुप्रास है ।

- बरसाती आंखों के बादल बनते जहां भरे करुणा जल - में रूपक अलंकार है।

- हेम कुंभ ले उषा सवेरे - भरती ढुलकाती सुख मेरे, मदिर ऊंघते रहते जब जगकर रजनीभर तारा-में रूपक एवं मानवीकरण अलंकार के साथ बिम्ब निर्माण से काव्य में अनुपम सौंदर्य की आभा आ गई है।